प्रकाश पर्येकार

वर्सल*

सूरज निकलने से पहले ही पार्वती ने दाली का शेष बचा हुआ हिस्सा बुनकर समाप्त किया। उसने चौबीस पाँव लंबी और बारह पाँव चौड़ी दाली बनाने में चार दिन लगाए। वह यह कार्य घर के कामों से फ़ुर्सत मिलने के बाद ही किया करती थी। पति की मृत्यु के बाद दशहरे के अवसर पर लगनेवाले नामी बाज़ार को उसने कभी नहीं छोड़ा क्योंकि उसमें खेती-बारी से जुड़ी काम में आनेवाली बाँस द्वारा बनाई गई सभी वस्तुएँ बिकती थीं। किसान जीवन के लिए यह बाज़ार बहुत मायने रखता था। पार्वती ने चार जोड़े सूप पहले ही बनाकर रखे थे। उसके मन में यह लालसा थी कि एक दाली और बन जाती तो कितना अच्छा होता? इसके लिए बाँस लाना...उसके टुकड़े करना...फिर फोड़ना...और उसकी फल्टी निकालकर साफ़ करना...तथा बारीक-बारीक पत्ती निकालना...यह सब कार्य उसी को करना था। मधु, पार्वती का इकलौता बेटा अपनी पढ़ाई के कारण माँ के कामों में हाथ नहीं बँटा पाता था लेकिन बिना मतलब इधर-उधर घूमता भी नहीं था। वह सुबह स्कूल जाता और दोपहर बाद कहीं-न-कहीं कुछ काम-धाम करके अपनी पढ़ाई के ख़र्च का जुगाड़ कर लेता था।

पार्वती ने कोंयता, छुरी और बेलां इकट्ठा किया तो उसने देखा कि उसकी साड़ी पर बाँस के खुरचन एवं छोटे-छोटे टुकड़े गिरे हुए थे जिसे उसने साफ़ किया। दाली लपेटकर पार्वती उसे निहारने लगी तो वह उसे केले के तने के निचले भाग की तरह साफ़ एवं चिकनी दिखाई दे रही थी। पार्वती ने उसे उठाकर ओसारी में रख दिया।

पार्वती चार-पाँच साल पहले सरकार द्वारा बनाए गए दो कमरों के मकान में गुज़ारा करती थी। दीवार के बीचों-बीच दरार पड़ने के कारण सूर्य की किरणें अंदर झाँक रही थीं। पार्वती की निगाह उस पर बार-बार पड़ती थी। उसने उसे गीली मिट्टी से भरने के लिए कई बार सोचा लेकिन घर के कामों से फ़ुर्सत न मिलने के कारण यह काम बार-बार टल जाता था। आज उसने यह निश्चय

कोंकणी के कथाकार प्रकाश पर्येकार के निबंध, लेख, समीक्षा तथा कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। संपर्क: प्रवक्ता, कोंकणी अध्ययन केंद्र, गोआ विश्वविद्यालय, गोआ 403206

अनु. 1957 में जन्मे रवींद्रनाथ मिश्र की चार पुस्तकें प्रकाशित। कोंकणी हिंदी में परस्पर अनुवाद। संपर्क : बी-1 प्रीति अपार्टमेंट, वसुधा कॉलोनी, बंबोलिम कॉम्प्लेक्स, गोआ 403202

* वर्सल : गाँव में विविध त्योहारों पर ढोलक बजाने की पारी। यह पारी पूरे साल एक परिवार को बारी-बारी से मिलती है।

किया कि मैं यह दरार मूँदकर ही रहूँगी। इस प्रकार वह सोचती हुई चूल्हे के पास गई और चाय के पतीले में झाँकते हुए बोली, "अरे! बच्चों ने आज मेरे लिए चाय नहीं छोड़ी।" पार्वती ने उसमें एक गिलास पानी डालकर उसे चूल्हे पर रख दिया। जली हुई लकड़ी में आग लगाकर उसने चूल्हे में डाला ही था कि किसी के पुकारने की आवाज़ आई। "तिलगो जीजा आज क्यों आया है!" कहते हुए पार्वती ने उसकी आवाज़ पहचान ली थी। वह जल्दी से बाहर आई तो देखा कि तिलगो जीजा ढोलक लेकर आँगन में खड़ा है! (पार्वती आदरभाव से तिलगो को जीजा कहती थी)

"जीजा बैठिए।"

"बैठता नहीं...जाता हूँ...ढोलक देने आया था। इस दशहरे से तुम्हारी वर्सल..." तिलगो ढोलक और बजानेवाली लकड़ी ओसारी में रखकर वापस जाने को मुड़ा ही था कि पार्वती ने आवाज़ दी, "थोड़ी चाय पीकर तो जाओ..."

"नहीं...जाता हूँ। अभी मुझे बाँस लाना है, देखिए मिलता है कि नहीं?"...यह कहते हुए वह आगे क़दम बढ़ाते हुए चल पड़ा। 'वर्सल!' पार्वती ने ढोलक पर हाथ फिराया तो वह फूली न समाई और मन-ही-मन सोचने लगी। इस साल पेट की कमी नहीं होगी। गणेश चतुर्थी एवं सिग्मोत्सव के अवसर पर घर-घर जाने पर सौ-डेढ़ सौ नारियल, अनाज और पैसे मिलेंगे। मड़ाई के दिनों में खलिहान में जाने पर खलिहानी भी मिलेगी। इससे मुझे सालभर दाली, सूप, टोकरी आदि बनाने के लिए भरपूर समय मिलेगा और चार पैसे का मुनाफ़ा भी होगा। वर्सल की ख़ुशियाँ उसके संपूर्ण शरीर में फैल गईं और वह रोमांचित हो उठी। हवा में रुक-रुककर उड़ते हुए बाँस की खुरचन की भाँति उसका मन भी उड़ने लगा। पार्वती ने हिसाब-किताब लगाकर सोचा तो उसे शादी के बाद यह चौथा वर्सल मिला था। उन दिनों में किसी के पास जाकर न तो चावल माँगने की ज़रूरत पड़ी और न तो दुकानदार की उधारी...। इन विचारों में खोई हुई पार्वती चूल्हे पर रखी हुई चाय के बारे में भूल ही गई। याद आने पर वह भागी-भागी चूल्हे के पास गई तो उसने देखा कि भगोने में एक घूँट पानी बचा था जिसमें से सुड़-सुड़ की आवाज़ आ रही थी। अरे! मेरे होश को लकवा मार गया क्या? सुबह-सुबह चाय न मिलने पर उसे अंदर से बेचैनी महसूस होती थी। पार्वती ने पुनः भगोने में पानी डालकर चाय बनाई और पी।

दोपहर को उसके दोनों बच्चे मंगल और मधु स्कूल से घर आए। खाना खाने के बाद मंगल ने माँ से पूछा "माँ यह ढोलक किसकी है?"

"इस साल हमारी वर्सल है। यह ढोलक सुबह तिलगो जीजा ने लाकर दी।"

"मैं बजाकर देखूँ।"

"पगली कहीं की। लड़कियाँ ढोलक नहीं बजातीं।"

"किसे बजानी चाहिए?"

"तुम्हारे भैया को। इस साल वही गाँव में ढोलक बजाएगा।"

"सच! मैं भी उसके साथ जाऊँगी।" मंगल के इस प्रकार बोलने पर पार्वती को अपने मरद की याद आ गई। जब वह ज़िंदा था तो इसी तरह मधु भी उसके साथ जाने के लिए हठ किया करता था। विभिन्न त्योहारों पर मधु उसका पीछा नहीं छोड़ता था।

"हाँ, इस साल तुम दोनों पराब* के लिए जाना।"

"पराब में जो पैसे मिलेंगे वह तुम दोनों आपस में मिलकर बाँट लेना।" मंगल यह सुनकर मुस्कुराई और तितली की भाँति इधर-उधर फुदकने लगी।

---

* पराब : वर्सल बजाने पर घर-घर से मिला सामान (अनाज, नारियल, पैसा आदि)

"अच्छा! अब जाओ और भाई को बुलाकर लाओ।" मधु खाना खाकर तुरंत कहीं बाहर निकला था। मंगल उसे ढूँढ़ने के लिए भागी-भागी गई। कुछ देर बाद मधु घर आया।

"माँ किसलिए बुलाया?" मधु ने ज़ोर से पुकारकर बाहर से ही पूछा।

"इधर आओ कुछ बात करनी है...।"

"क्या है?" मधु ओसारी में आया।

"परसों दशहरा है और इस साल की वर्सल हमारी है। दशहरे के दिन मंदिर के पास ढोलक बजानी है? तिलगो जीजा ने ढोलक लाकर दी है...और सुनो! खूँटी पर ढोलक टँगी है उसे उतारो और येश्या दादा से ठीक कराकर ले आओ।" मधु ने माँ की बात सुनी फिर भी चुपचाप खड़ा रहा।

"क्या तुम नहीं जा रहे हो? फिर कब जाओगे? कल का दिन ही तो बचा है।"

"मुझे ऐसा-वैसा काम मत बताओ...।"

"नहीं बताऊँ! तो इस साल की वर्सल कौन बजाएगा?"

"मैं नहीं बजाऊँगा...और किसी को बोलो।"

"तुम्हारे सिवा और कौन बजाएगा? तुम्हारा बाप होता तो मैं तुमसे चिरौरी क्यों करती?"

"तुम कोई दूसरा काम बताओ तो करूँगा लेकिन ढोलक गले में नहीं डालूँगा।"

"ऐसा मत बोल बेटा! इससे चार नारियल घर में आएँगे। धान एवं पैसा भी मिलेगा। चार दिन सुख-चैन से बीतेंगे...नहीं तो मुखिया गाँव से बाहर निकालेगा।"

"निकालता है तो निकालने दो लेकिन...मैं ढोलक के ऊपर डंडा नहीं मारूँगा।" मधु अधिक देर तक नहीं रुका। वह घर के बग़ल की राह से मैदान की ओर चल पड़ा। पार्वती सिमटकर बैठ गई जैसे मानो उसके सारे सपने वहीं तितर-बितर हो गए। उसका माथा चकराने लगा। उसे लगा कि जैसे कोई मेरे शरीर की फल्टियाँ निकाल रहा हो। "अब क्या होगा...?" पार्वती ने लंबी साँस ली, "परसों दशहरा! किसी से चिरौरी-मिनती करूँगी तो दशहरा पर ढोलक बजा देगा किंतु पूरे साल का क्या होगा? नहीं! ऐसा नहीं होना चाहिए। मधु को वर्सल बजानी ही होगी।" पार्वती आहें भरती हुई उठी और खूँटी पर टँगी हुई ढोलक को उतारकर येश्या दादा के पास गई। वह ओसारी में बैठकर फल्टियाँ खरोंच रहा था।

"अरे! तुम ढोलक लेकर यहाँ कैसे?"

"इस साल हमारी वर्सल है न? ढोलक को थोड़ा कसना है।"

"मधु को कसना नहीं आता? अभी तो वह घोड़े जैसा सयाना हो गया है।"

"क्या बताऊँ? बोल-बोलकर थक गई। उसे यह काम पसंद नहीं है।"

"पसंद नहीं है? पसंद होना ही चाहिए...।"

"कौन जाने? किसी ने उसका माथा फेर दिया है। वर्सल बजाने को कहा तो ढोलक हाथ में लेने को तैयार ही नहीं। थोड़ा आप तो समझाइए।"

"अब मेरी कौन सुनेगा...? मिला तो बोलता हूँ।" येश्या दादा ने वहीं बैठे-बैठे ही ढ़ोलक को कसकर थाप दी। ढोलक झनझनाने लगी...पार्वती बिना और समय गँवाए ढोलक लेकर सीधे घर गई। उसने ढोलक को वहीं खूँटी पर लटका दिया।

पार्वती ने बाज़ार से लाई हुई झोली को खोला। उसमें दो सेब निकालकर मंगल और मधु को दिए। बाक़ी बचे सामान को रखकर झोली झाड़कर खूँटी पर टाँग दी। मधु छूही के दोनों तरफ़ पाँव फैलाकर बैठा हुआ किताब पढ़ रहा था। वह बारहवीं कक्षा में था इसलिए हर हालत में पढ़ाई में लगा रहता। मंगल उसके पास बैठकर किताब को इधर-उधर कर रही थी कि पार्वती वहाँ आई।

"बाबू वर्सल बजाएगा न?" पार्वती ने अधीर होकर पूछा। मधु ने पलभर के लिए पुस्तक से

ध्यान हटाकर तिरछी नज़रों से माँ को देखा और पुनः किताब पढ़ने लगा।

"बाबू ऐसा मत कर। वर्सल की पारी को हाथ से मत जाने दे। दुबारा नहीं मिलेगी।"

"वर्सल नहीं मिली तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ेगा!"

"यह पेट का सवाल है।"

"पेट भरने के और बहुत-से उपाय हैं।"

"गाँवकार हमें सताएँगे...भले-बुरे में कौन साथ देगा?"

"मत दें।"

"ऐसा बड़बोलापन तुमने कहाँ से सीखा?"

"इसी किताब से।" मधु ने ऊँची आवाज़ में कहा और ग़ुस्से में आकर पुस्तक वहीं पर पटक दी।

"आग लगे तुम्हारी पुस्तक को!"

"आग लगाओ उन गाँवकारों के मुँह को जिन्होंने हम जैसे नीच जातिवालों को सदियों से सताया एवं अपमानित किया है। जाओ बोल दो उन लोगों को कि शंकर हरिजन का बेटा वर्सल बजाने को तैयार नहीं है।" मधु का ग़ुस्सा माँ एवं गाँवकारों पर एक साथ था। अचानक उसे अपने बचपन की वह घटना उस समय जीवंत हो उठी जब उसके पिता को वर्सल के समय गाँवकारों ने ढोलक के डंडों से पीटा था। इसलिए वह और भी क्रोधित हो उठा। मंगल ने भाई को माँ के ऊपर इतना ग़ुस्सा होते हुए कभी नहीं देखा था इसलिए वह घबरा उठी और डर के मारे काँपने लगी। वह घबराई हुई नज़रों से माँ और मधु को देखती रह गई।

आज दशहरा। मंदिर के पास सैकड़ों लोग जमा होंगे... ढोलक बजेगी... तरंगें झूलेंगी... अवसर* आएगा...धार्मिक वृक्ष के पत्ते को श्रद्धालु सोना समझकर ले जाएँगे...चारों ओर ख़ुशी का आलम होगा...यह सब सही है लेकिन अभी तक मंदिर के पास ढोलक नहीं पहुँची। गाँवकार अपने-अपने कामों में लगे हुए थे...दशहरे की सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं...ढोलक बजानेवाला अभी तक नहीं आया यह देखकर किसी एक गाँवकार ने ज़ोर से चिल्लाकर आवाज़ लगाई, "म्हाड्डो किधर गया?"

"उसे जाकर देखो कहाँ गुह खा रहा है।" एक दूसरे ने आवाज़ दी।

"अरे! वर्सल किसका है पहले यह तो पता करो?" आपी गाँवकार ने सभी को समझाते हुए पूछा।

"बाबा, मेरा बच्चा वर्सल नहीं बजाना चाहता।" पार्वती भीड़ से निकलकर गाँवकार मुखिया के पास गई और डरी हुई आवाज़ में बोली।

"क्या? वर्सल नहीं बजाएगा! गाँव के साथ रहना है कि नहीं तुम्हें? तरंग सजाने में पहले ही देरी हो गई और यह दूसरा झंझट।" इस प्रकार सोचकर आपी गाँवकार ग़ुस्से में पार्वती के ऊपर चिबुआकर दौड़ा तो वह डर के मारे सिकुड़ गई और कुछ भी नहीं बोली।

"राजग्या इधर आओ। पार्वती के पास से ढोलक लाकर इस साल का वर्सल तुम बजाओ।" गाँवकार ने मुझे वर्सल बजाने को कहा यह सोचकर राजगो मन-ही-मन बहुत ख़ुश हुआ। आज उसके लिए बिल्ली के भाग से छिंका टूटने जैसी बात हो गई क्योंकि यह वर्सल उसे पहली बार मिली थी। मेरे हक की वर्सल राजग्या के पास चली गई यह सोचकर पार्वती को बहुत दुख हुआ। उसकी आँखें भर आईं। वह वहाँ रुकी नहीं चुपचाप घर की ओर चल पड़ी। राजग्या उसके पीछे-पीछे एक पाँव के सहारे उझकते हुए चलने लगा...।

मधु ओसारी में दीवार के सहारे बैठा हुआ था। पार्वती सीढ़ियाँ चढ़ती हुई वहाँ गई और

---

* अवसर : दशहरा उत्सव के दिन तरंग धारण करनेवाले व्यक्ति पर देव की सवारी।

खूँटी से ढोलक उतारकर बिना कुछ बोले राजग्या को दे दी। उसने भी ढोलक चुपचाप ले ली और मंदिर के रास्ते की ओर चल पड़ा। पार्वती राजग्या के कंधे पर लटकी हुई ढोलक को तब तक देखती रही जब तक वह नज़रों से ओझल नहीं हो गया। अब वर्सल उसकी ज़िंदगी में नहीं आएगी। इस दुख से उसका कलेजा फटा जा रहा था...।

कुछ समय बाद ढोलक की आवाज़ आने लगी...जो कि पार्वती के हृदय को उसी प्रकार खुरच रही थी जैसे कि बाँस की फल्टी को कोंयते से...अभी तरंगों का अवसर आएगा...उसे लगा कि अभी अपने ऊपर ही अवसर आ गया है...मधु को ऐसा महसूस हुआ कि माँ का चित्त अभी ठिकाने पर नहीं है। वह धीरे-से उठकर माँ के पास गया और उसे क्षणिक अनुभव हुआ कि माँ की बात मान लेनी चाहिए थी किंतु दूसरे ही क्षण उसने उस बात को अपने मन से निकाल दिया। मधु ने माँ से धीमी आवाज़ में पूछा, ''माँ तू क्यों रो रही है, वर्सल के लिए?''

''हाँ बेटा...।'' उसे हुचकी आई।

''माँ दुखी मत हो। तुम्हारा मधु बिना किसी के सामने झुके ही अपने बल पर चार पैसे कमाएगा।'' मधु के इन शब्दों ने पार्वती के हृदय को तरलता प्रदान की। उसका भारी मन रूई की भाँति हल्का हो गया...वह ममता भरी आँखों से अपने कलेजे के टुकड़े को देखती रही...मधु ने अंदर जाकर दशहरे के अवसर पर पूजा के लिए आजीविका हेतु काम में आनेवाली सारी वस्तुओं पर नज़र दौड़ाई...। उसमें से कोंयता निकालकर वह आँगन में आया और दाली बनाने के लिए बाँस फाड़ने लगा।...